विषयानुक्रमणिका

१. आमुख vii
२. अवतरणिका-प्रस्तार xi-li

[प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में सूचित विधि के अनुसार ही इस खण्ड में भी सविस्तार विषयावली-क्रम परमपूज्यपाद आचार्यदेव श्रीश्रीपुरीदासजी के ही सम्पादित संस्करण (बंगलालिपि) पर आधारित है, पृष्ठसंख्या प्रस्तुत संस्करण की दी गयी है। प्रथम खण्ड में मूलग्रन्थ का पूर्वार्द्ध (दो विभाग — (१) पूर्व तथा (२) दक्षिण आ चुका है, उत्तरार्द्ध के दो विभाग (३) पश्चिम (४) उत्तर इस द्वितीय खण्ड में लिये जा रहे हैं। — सम्पा०]

श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु-उत्तरार्ध

३. मुख्यभक्तिरसनिरूपक

पश्चिमविभाग

प्रथमलहरी — शान्तभक्तिरस

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठसंख्या
मङ्गलाचरण	१	२
विभाग की लहरियों के विषय	२-३	२
शान्तभक्तिरस	४-६	२-४
उस में आलम्बन	७	४
चतुर्भुज (श्रीहरि)	८-१०	४
शान्त (-भक्त)	११	४
आत्माराम	१२	६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
उन का रूप	१३	६
भक्ति	१४	६
तापस (भक्त)	१५-१७	६-८
शान्त रस में उद्दीपन	१८-२२	८
चरणकमलों की तुलसी-सुगन्ध	२३	१०
अनुभाव	२४-२६	१०
नासाग्रनयनत्व	२७-२८	१०-१२
जृम्भा	२९	१२
(सात्त्विक भाव शान्त रस में)	३०	१२
रोमाञ्च	३१	१२
मुनियों में सात्त्विक (भाव)	३२	१२
सञ्चारी भाव	३३	१४
निर्वेद	३४	१४
स्थायी (द्विविध)	३५	१४
आद्या (समा)	३६	१४
सान्द्रा	३७	१४
शान्त द्विविध	३८	१४
पारोक्ष्य	३९-४०	१६
साक्षात्कार	४१-४२	१६
श्रीकृष्णकृपाप्राप्त शान्त भक्त श्रेष्ठ	४३-४७	१८
केवल शान्त	४८-५१	१८-२०

द्वितीय लहरी — प्रीतभक्तिरस

प्रीतभक्तिरस के लक्षण आदि	१-३	२२
प्रीतभक्ति के भेद—गौरव, सम्भ्रम	४	२२
सम्भ्रमप्रीत	५	२२
आलम्बन	६	२२
श्रीहरि	७-८	२४
द्विभुज	९	२४
चतुर्भुज	१०	२४
श्रीवासुदेव के रूप-गुण आदि की विशिष्टता	११-१५	२६
दास	१६-१७	२६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
दास-चतुर्विध	१८	२८
अधिकृत	१९-२०	२८
आश्रित-त्रिविध	२१-२२	२८
शरण्य	२३-२५	३०
ज्ञानिचर	२६-२८	३०-३२
सेवानिष्ठ	२९-३०	३२
पारिषद	३१-३२	३२-३४
इनका रूप	३३	३४
इनकी भक्ति	३४	३४
प्रेमविक्लव (उद्धव)	३५	३४
उनका रूप	३६	३४
उनकी भक्ति	३७	३६
अनुग	३८	३६
इन में पुरवासी	३९	३६
इनके द्वारा सेवा	४०	३६
व्रजवासी	४१-४२	३६
उनका रूप	४३	३६
उनकी सेवा	४४	३६
व्रजवासी अनुगों में श्रेष्ठ रक्तक	४५	३६
उसका रूप	४६	४०
उसकी भक्ति	४७	४०
पार्षद त्रिविध	४८	४०
धुर्य	४९-५०	४०
धीर	५१-५२	४२
वीर	४३-५५	४२-४४
त्रिविध दास पुनः त्रिविध	५६	४४
उद्दीपन (विभाव)	५७	४४
अनुग्रह-सम्प्राप्ति	५८	४४
साधारण उद्दीपन	५९	४४
मुरलीध्वनि	६०	४६
अनुभाव	६०	४६
अपने नियोग का अधिक महत्त्व	६२	४६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
उद्भास्वर आदि साधारण अनुभाव	६३	४६
इनमें-नृत्य	६४-६५	४८
सात्त्विक भाव	६६-६८	४८
व्यभिचारी भाव	६९-७१	५०
इनमें-हर्ष	७२-७३	५०
क्लम	७४	५२
निर्वेद	७५	५२
स्थायिभाव	७६-७८	५२
सम्भ्रमप्रीति	७९-८०	५४
प्रेमा	८१-८३	५४
स्नेह	८४-८६	५६
राग	८७-९२	५६-५८
राग के दो प्रभेद — अयोग, योग	९३	६०
अयोग	९४	६०
इसके भी दो प्रभेद उत्कण्ठा, वियोग	९५	६०
उत्कण्ठा	९६-९८	६०
प्रमुख व्यभिचारी	९९	६२
उत्सुकता	१००-१०१	६२
दैन्य	१०२-१०३	६२-६४
निर्वेद	१०४	६४
चिन्ता	१०५	६४
चपलता	१०६-१०७	६४-६६
जड़ता	१०८-१०९	६६
उन्माद	११०-१११	६६-६८
मोह	११२-११३	६८
वियोग	११४-११५	६८-७०
इस वियोग की दस अवस्थायें	११६-११७	७०
(१) ताप	११८	७०
(२) कृशता	११९	७२
(३) जागरण	१२०	७२
(४) आलम्बशून्यता	१२१	७२

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
(५) अधृति	१२२	७२
(६) जडता	१२३	७४
(७) व्याधि	१२४	७४
(८) उन्माद	१२५	७४
(९) मूर्च्छा	१२६	७४
(१०) मृति, मरण	१२७-२८	७६
योग - त्रिविध	१२९	७६
सिद्धि	१३०-३२	७६-७८
तुष्टि	१३३-३५	७८
स्थिति	१३६-३७	७८-८०
योग में क्रिया	१३८	८०
स्थिति-विषयक अन्य पुराणमत-सूचन एवं	१३८	८०
श्रीमद्भागवत-सिद्धान्त-स्थापन	१३९-१४२	८०-८२
भक्त-भावों में कालादि-वैशिष्ट्य से व्यतिक्रम	१४३	८२
गौरवप्रीति	१४४	८२
इसके आलम्बन	१४५	८२
हरि	१४६-४७	८२-८४
लाल्य	१४८	८४
इनका रूप	१४९	८४
इनकी भक्ति	१५०	८४
प्रमुख लाल्य प्रद्युम्न	१५१	८४
उनका रूप	१५२	८६
उनकी भक्ति	१५३	८६
पुरस्थित तथा व्रजस्थित सेवकों-लाल्यों में पार्थक्य	१५४-५५	८६
उद्दीपन	१५६-५७	८६-८८
अनुभाव	१५८	८८
नीचे आसन पर बैठना	१५९	८८
दास्य के कुछ अनुभाव	१६०-६१	८८
सात्त्विक भाव	१६२	९०
व्यभिचारिभाव	१६३	९०
हर्ष	१६४	९०
निर्वेद	१६५	९०

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
स्थायिभाव	१६६-६७	९२
गौरवप्रीति	१६८	९२
प्रेम	१६९	९२
स्नेह	१७०	९४
राग	१७१	९४
प्रीत-प्रेयो-वत्सल में पूर्ववत्		
अयोग-योग आदि भेद	१७२	९४
उत्कण्ठा	१७३	९४
वियोग	१७४	९४
सिद्धि	१७५	९६
तुष्टि	१७६	९६
स्थिति	१७७-७८	९६

तृतीय लहरी — प्रेयोभक्तिरस (सख्य)

प्रेयान् रस (सख्य)	१	९८
आलम्बन	२	९८
हरि	३	९८
व्रज में द्विभुज	४	९८
अन्यत्र चतुर्भुज	५	९८
हरि के रूप-गुण-आदि	६-७	१००
हरि के वयस्य (सखा)	८-९	१००
द्विविध	१०	१००
पुरसम्बन्धी	११	१००
इनका सख्य	१२	१०२
इनमें श्रेष्ठ-अर्जुन	१३	१०२
उसका रूप	१४	१०२
उसका सख्य	१५	१०२
व्रजसम्बन्धी	१६	१०४
इनका रूप	१७	१०४
इनका सख्य	१८-१९	१०४
इनके प्रति श्रीकृष्ण का सख्य	२०	१०६
चतुर्विध सखा	२१	१०६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
(१) सुहृद्	२२-२३	१०६
इनका सख्य	२४	१०६
इनमें श्रेष्ठ	२५	१०८
मण्डलीभद्र का रूप	२६	१०८
मण्डलीभद्र का सख्य	२७	१०८
श्री बलदेव का रूप	२८	१०८
श्री बलदेव का सख्य	२९	११०
(२) सखा	३०-३१	११०
इनका सख्य	३२	११०
इनमें श्रेष्ठ	३३	११०
उसका रूप	३४	११२
उस का सख्य	३५	११२
(३) प्रियसखा	३६-३८	११२
इनका सख्य	३९	११४
इनमें प्रवर	४०	११४
उसका रूप	४१	११४
उसका सख्य	४२	११४
(४) प्रिय नर्मसखा	४३	११६
इनका सख्य	४४	११६
इनमें प्रवर दो	४५	११६
सुबल का रूप	४६	११६
सुबल का सख्य	४७	११८
उज्ज्वल का रूप	४८	११८
उज्ज्वल का सख्य	४९	११८
उज्ज्वल का वैशिष्ट्य	५०-५१	११८-२०
ये सखा पुनः त्रिविध	५२-५३	१२०
उन की मैत्री-वैचित्री-चारुता आदि	५४-५६	१२०
उद्दीपन (विभाव)	५७	१२२
वयस्	५८	१२२
कौमार	५९-६०	१२२
पौगण्ड (त्रिविध)	६१	१२२
आद्य-पौगण्ड	६२-६३	१२४

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
पुष्पमण्डनादि	६४-६६	१२४
मध्य-पौगण्ड	६७-७१	१२६
शेष-पौगण्ड	७२-७७	१२८-३०
कैशोर	७८-८०	१३०
रूप	८१	१३०
शृङ्ग (सींगा)	८२	१३२
वेणु	८३	१३२
शङ्ख	८४	१३२
विनोद	८५	१३२
अनुभाव	८६-८८	१३४
नियुद्ध से तोषण	८९	१३४
सुहृदों की क्रियाएँ	९०	१३४
सखाओं की क्रियाएँ	९१	१३४
प्रियसखा की क्रियाएँ	९२	१३६
प्रियनर्मसखा की क्रियाएँ	९३-९४	१३६
वयस्यों के कुछ अनुभाव	९५-९६	१३६
सात्त्विक (भाव) उन में स्तम्भ	९७	१३६
स्वेद	९८	१३८
रोमाञ्च	९९	१३८
स्वरभेद आदि चार	१००	१३८
अश्रु	१०१	१३८
व्यभिचारिभाव	१०२-३	१४०
उन में हर्ष	१०४	१४०
स्थायिभाव	१०५-६	१४०
सख्यरति	१०७	१४२
प्रणय	१०८-१०९	१४२
प्रेम	११०	१४२
स्नेह	१११-११२	१४४
राग	११३-१४	१४४
अयोग में उत्कण्ठा	११५	१४६
वियोग में क्षोभ	११६	१४६
ताप आदि दस दशायें	११७	१४६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
इनमें ताप	१८८	१४६
कृशता	११९	१४६
जागरण	१२०	१४८
आलम्बन-शून्यता	१२१	१४८
अधृति	१२२	१४८
जड़ता	१२३	१४८
व्याधि	१२४	१५०
उन्माद	१२५	१५०
मूर्च्छा	१२६	१५०
मृति (मरणप्रायता)	१२७	१५०
श्रीकृष्ण के साथ नित्यलीला में वियोगाभाव	१२८-२९	१५२
योग में सिद्धि	१३०	१५२
तुष्टि	१३१-३२	१५२
स्थिति	१३३	१५४
प्रेयान् रस की सभी रसों में व्यापकता	१३४-३६	१५४

चतुर्थ लहरी — वत्सलभक्तिरस

वत्सलरस-संज्ञा	१	१५६
आलम्बन	२	१५६
श्रीकृष्ण	३	१५६
कृष्ण के रूप, लीला, गुणादि	४	१५६
कृष्ण स्वयं आलम्बन विभाव	५-६	१५६-५८
गुरुजन (विभाव)	८-११	१५८-६०
व्रजेश्वरी का रूप	१२-१३	१६०
व्रजेश्वरी का वात्सल्य	१४	१६०
व्रजाधीश का रूप	१५	१६२
व्रजाधीश का वात्सल्य	१६	१६२
उद्दीपन (विभाव)	१७	१६२
कौमार त्रिविध	१८	१६२
आद्य-कौमार	१९-२०	१६२-६४
यहाँ श्रीकृष्ण-चेष्टायें	२१-२२	१६४
मण्डन	२३-२४	१६४

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
मध्य-कौमार	२५-२६	१६६
प्रसाधन	२७-२८	१६६
शेष-कौमार	२९-३०	१६६-६८
मण्डन	३१	१६८
यहाँ श्रीकृष्ण-चेष्टायें	३२-३३	१६८
पौगण्ड (अवस्था)	३४-३५	१६८-१७०
कैशोर	३६-३८	१७०
शैशव-चापल्य	३९-४०	१७०-७२
अनुभाव	४१	१७२
मस्तक सूँघना	४२-४३	१७२
वत्सल में साधारण क्रियाएँ	४४	१७४
सात्त्विकभाव	४५	१७४
दूध झरना	४६-४७	१७४
स्तम्भ आदि	४८	१७४
व्यभिचारिभाव	४९	१७६
हर्ष	५०-५१	१७६
स्थायिभाव	५२-५३	१७६
वात्सल्यरति	५४-५५	१७८
प्रेमवत्	५६-५७	१७८
स्नेहवत्	५८	१८०
रागवत्	५९	१८०
अयोग में उत्कण्ठा	६०-६१	१८०
वियोग	६२-६३	१८२
वियोग में कुछ अनुभाव	६४	१८२
चिन्ता	६५	१८२
विषाद	६६	१८४
निर्वेद	६७	१८४
जडता	६८	१८४
दैन्य	६९	१८४
चपलता	७०	१८६
उन्माद	७१	१८६
मोह	७२	१८६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
योग में सिद्धि	७३	१८६
तुष्टि	७४-७५	१८८
स्थिति	७६	१८८
नाट्यज्ञों के मत से वत्सलरस	७७-७८	१८८
वत्सल में अन्य रसों का भाव-मिश्रण	७९-८४	१९०

पञ्चम लहरी — मधुरभक्तिरस

मधुररतिलक्षण	१	१९२
मधुररस दुरूह रहस्य	२	१९२
आलम्बन	३	१९२
श्रीकृष्ण	४-५	१९२
उनकी प्रेयसीगण	६	१९४
उनमें प्रवरा	७	१९४
उनका रूप	८	१९४
उनकी रति	९	१९४
श्रीकृष्ण की रति	१०	१९६
उद्दीपन	११-१२	१९६
अनुभाव	१३-१४	१९६
सात्त्विक भाव	१५	१९८
व्यभिचारी भाव	१६	१९८
निर्वेद	१७	१९८
हर्ष	१८	१९८
स्थायी भाव	१९-२०	२००
श्रीराधामाधव की नित्यरति	२१-२३	२००
मधुररस द्विविध	२४	२०२
(१) विप्रलम्भ	२५	२०२
पूर्वराग	२६-२८	२०२
मान	२९-३०	२०४
प्रवास	३१-३३	२०४
(२) सम्भोग	३४-३५	२०६
विभाग-उपसंहार	३६-३७	२०६

४. गौणभक्तिरसनिरूपक

उत्तरविभाग

प्रथम लहरी — हास्यभक्तिरस

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
मङ्गलाचरण	१	२०८
इस विभाग के लहरी-विषय	२-५	२०८
हास्यभक्तिरस	६	२०८
आलम्बन	७	२१०
श्रीकृष्ण	८	२१०
उन से सम्बद्ध	९-११	२१०-२१२
उद्दीपन तथा अनुभावादि	१२-१३	२१२
हासरति के छह प्रकार	१४-१५	२१२
स्मित	१६-१७	२१४
हसित	१८-१९	२१४
विहसित	२०-२१	२१४-१६
अवहसित	२२-२३	२१६
अपहसित	२४-२५	२१६
अतिहसित	२६-२७	२१८
विभावादि द्वारा गम्य हास	२८-२९	२१८
हास्य शृङ्गारादि का ही भेद	३०	२२०

द्वितीय लहरी — अद्भुतभक्तिरस

अद्भुत-भक्तिरस-निरूपण	१	२२२
आश्रय-विषय	२	२२२
उद्दीपन एवं क्रिया	३	२२२
व्यभिचारी तथा स्थायिभाव	४	२२२
द्विविध कर्म	४	२२२
(१) साक्षात् विविध	५	२२२
दृष्ट	६-८	२२२-२२४
श्रुत	९	२२४
सङ्कीर्तित	१०	२२४
अनुमित	११	२२६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
अद्भुत रस में रतिवैचित्र्य	१२-१३	२२६

तृतीय लहरी — वीरभक्तिरस

वीरभक्तिरस-संज्ञा, प्रकार, आलम्बन	१-३	२२८
युद्धवीर	४-५	२२८
कृष्ण	६-७	२२८-२३०
सुहृद्	८	२३०
युद्धकेलिसमुत्साह	९-१०	२३०
उद्दीपन	११	२३०
कत्थित	१२	२३२
अनुभाव	१३-१४	२३२
कत्थित	१५	२३२
आहोपुरुषिका	१६	२३२
सात्त्विक भाव	१७-१८	२३४
स्वशक्ति से आहार्योत्साह	१९	२३४
स्वशक्ति से सहजोत्साह	२०-२१	२३४-३६
सहाय द्वारा आहार्योत्साह	२२	२३६
सहाय द्वारा सहजोत्साह	२३	२३६
वीर और रौद्र का भेदक	२४	२३६
दानवीर द्विविध	२५	२३८
बहुप्रद	२६-२८	२३८
द्विविध-बहुप्रद	३०	२३८
आभ्युदयिक	३१-३२	२३८-४०
तत्सम्प्रदानक	३३-३४	२४०
प्रीतिदान	३५-३६	२४०
पूजादान	३७-३९	२४२
उपस्थितदुरापार्थत्यागी	४०	२४२
कारकविपर्यय, इस के उद्दीपन, अनुभाव तथा सञ्चारी आदि	४१-४६	२४२-४४
दयावीर	४७	२४४
इस के उद्दीपन	४८	२४६
क्रियायें, सञ्चारी भाव	४९	२४६

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
स्थायी भाव	५०-५१	२४६
दानवीर-दयावीर में भेदक	५२-५३	२४६
त्रिविध वीर-मत	५४	२४८
धर्मवीर	५५-६०	२४८-५०
त्रिविध वीर - मत	६१	२५०

चतुर्थ लहरी — करुणभक्तिरस

करुण-रस निरूपण	१	२५२
आलम्बन-त्रिविध	२-३	२५२
आलम्बन, उद्दीपन	४	२५२
अनुभाव	५	२५२
सात्त्विक तथा व्यभिचारी भाव	६	२५२
स्थायीभाव	७	२५४
कृष्ण-विषयक	८-९	२५४
उनके प्रियजन-विषयक	१०	२५४
अपने प्रियजन-विषयक	११-१२	२५६
रति के न्यून-अधिक होने से रस का न्यून-अधिक होना	१३-१४	२५६
प्रेमाधिक्य से श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य को न देखना	१५	२५६
करुण में भी सुख की दुरूह मति	१६	२५८

पञ्चम लहरी — रौद्रभक्तिरस

रौद्रभक्तिरस-संज्ञा	१	२६०
इस रस के आश्रय, विषय	२	२६०
कृष्ण पर सखी का क्रोध	३-४	२६०
कृष्ण पर जरती का क्रोध	५-६	२६०-६२
कृष्ण के प्रति सब की रति	७	२६२
त्रिविध हितकारी (विषय)	८	२६२
इन में अनवहित	९-१०	२६२
साहसी	११-१२	२६४
ईर्ष्यालु	१३-१४	२६४

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
अहितकारी (विषय)	१५	२६४
अपना अहितकर	१६-१७	२६६
हरि का अहितकर	१८-१९	
उद्दीपन	२०	२६६
अनुभाव, तथा सात्त्विक भाव	२१-२३	२६८
व्यभिचारी भाव	२४	२६८
क्रोधरति-स्थायीभाव, त्रिविध	२५-२६	२६८
तीनों में त्रिविध क्रिया	२७	२६८
(क्रोध) वैरी के प्रति	२८	२७०
पूज्य के प्रति	२९	२७०
समान के प्रति	३०	२७०
न्यून के प्रति	३१	२७०
रति के बिना क्रोध में रसत्व नहीं	३२-३३	२७२

षष्ठ लहरी — भयानकभक्तिरस

भयानक-भक्तिरस-संज्ञा	१	२७४
आलम्बन द्विविध	२	२७४
दारुण	३	२७४
श्रीकृष्ण अनुकम्प्य के प्रति	४-५	२७४
दारुण (भयङ्कर) बन्धुओं के प्रति	६	२७६
श्रवण से भय	७	२७६
स्मरण से भय	८	२७६
उद्दीपन तथा सात्त्विक भाव	९-१०	२७६
व्यभिचारी भाव	११	२७८
स्थायीभाव	१२	२७८
भय के आलम्बनादि का विस्तार	१३-१६	२७८

सप्तम लहरी — बीभत्सभक्तिरस

जुगुप्सा रति ही बीभत्सभक्तिरस	१	२८०
आलम्बन	२-३	२८०
विक्रिया	४	२८०
व्यभिचारी भाव	५	२८०

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
स्थायी भाव - द्विविध जुगुप्सा	६	२८०
विवेक से उत्पन्न	७-८	२८०
प्राय: होने वाली	९-११	२८०-८२
इस रस का विश्लेषण, अन्यों से सम्बन्ध	१२-१४	२८२

अष्टम लहरी — रसों में मैत्री और वैर की स्थिति

रसों में परस्पर मैत्री-वैर-निरूपण	१-१५	२८६-९०
सुहृद् रस का कार्य	१६-१९	२९०
शान्त अङ्गी — प्रीत अङ्ग	२०	२९०
शान्त अङ्गी — बीभत्स अङ्ग	२१	२९२
शान्त अङ्गी — प्रीत, अद्भुत, बीभत्स अङ्ग	२२	२९२
प्रीत अङ्गी — शान्त अङ्ग	२३	२९२
प्रीत अङ्गी — बीभत्स अङ्ग	२४	२९४
प्रीत अङ्गी — बीभत्स, शान्त, वीर अङ्ग	२५	२९४
प्रेयान् अङ्गी — शृङ्गार अङ्ग	२६	२९४
प्रेयान् अङ्गी — हास्य अङ्ग	२७	२९४
प्रेयान् अङ्गी — शृङ्गार तथा हास्य अङ्ग	२८	२९६
वत्सल अङ्गी — करुण अङ्ग	२९	२९६
वत्सल अङ्गी — हास्य अङ्ग	३०	२९६
वत्सल अङ्गी — भयानक, अद्भुत, हास्य, करुण अङ्ग	३१	२९८
वत्सल का अङ्ग कोई मुख्य रस नहीं	३२	२९८
उज्ज्वल (शृङ्गार) अङ्गी — प्रेयान् अङ्ग	३३	२९८
उज्ज्वल (शृङ्गार) अङ्गी — हास्य अङ्ग	३४	३००
उज्ज्वल (शृङ्गार) अङ्गी — प्रेयान् तथा वीर अङ्ग	३५	३००
गौण अङ्गी मुख्य अङ्ग होना सम्भव	३६	३००
हास्य अङ्गी शुचि (शृङ्गार) अङ्ग	३७	३०२
वीर अङ्गी प्रेयान् अङ्ग	३८	३०२
रौद्र अङ्गी प्रेयान् तथा वीर अङ्ग	३९	३०२
अद्भुत अङ्गी प्रेयान्, वीर तथा हास्य अङ्ग	४०	३०४
रसों की मुख्यता, गौणता, विपरीतता	४१-५२	३०४-०८

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
वैरी रस का कार्य		
रसविरोधिता के विविध उदाहरण	५३-६१	३०८-१०
रसाभास	६२	३१२
वैरस्य न होने की स्थिति	६३-६४	३१२
एक की बाध्यता में	६५-६६	३१२
स्मरण होते समय	६७	३१४
साम्यवचन में	६८-६९	३१४
अन्य रस का व्यवधान होने पर	७०	३१४
विषय भिन्न होने पर	७१-७२	३१६
आश्रय भिन्न होने पर	७३	३१६
वैरस्य होने की स्थिति	७४	३१८
विषय-भेद से	७५	३१८
आश्रय-भेद से	७६	३१८
भिन्न मत	७७-८०	३१८-२०
वैरस्य नहीं, कभी पोषक भी	८१-८३	३२०
अनेक रसों का विषयत्व	८४	३२०
अनेक रसों का आश्रयत्व	८५	३२०

नवम लहरी — रसाभास-निरूपिका

रसाभास-संज्ञा	१	३२४
रसाभास के भेद	२	३२४
उपरस	३	३२४
शान्त-उपरस द्विविध	४	३२४
पहला	५	३२४
दूसरा	६	३२६
प्रीत-उपरस	७-८	३२६
प्रेय-उपरस	९-१०	३२६-२८
वत्सल-उपरस	११-१२	३२८
शृङ्गार-उपरस	१३	३२८
स्थायी की विरूपता	१३	३२८
एकत्र रति	१४-१५	३३०
अनेकत्र रति	१६-१७	३३०

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
विभाव-विरूपता	१८	३३०
लता में	१९	३३२
पशुओं में	२०	३३२
भीलनी में	२१	३३२
वृद्धा में	२२	३३२
भाव-विरूपता की अन्य दशायें	२३-२४	३३४
अनुभावविरूपता	२५	३३४
'समय' का व्यतिक्रम	२६-२७	३३६
ग्राम्यता	२८-२९	३३६
धृष्टता	३०-३१	३३६
गौण हासादि भी उपरस	३२	३३६
अनुरस	३३	३३६
हास्य-अनुरस	३४	३३८
अद्भुत-अनुरस	३५	३३८
वीर आदि भी	३६-३७	३३८
अपरस	३८	३३८
हास्य-अपरस	३९	३४०
अद्भुत आदि भी	४०	३४०
ये सभी तत्त्वतः रस ही हैं	४१	३४०
रसावस्थान-सूचक चार वृत्तियाँ	४२	३४०

(लहरी तथा विभाग समाप्त)

ग्रन्थ का उपसंहार

ग्रन्थ-पूर्त्ति - उक्ति	१-२	३४२

पाठ-विमर्श

पाठान्तरों के साङ्केतिक चिह्न	३४५
पाठान्तर	३४५-३५१

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क

विमर्श

(अर्थ-सम्बन्धी विचार एवं टिप्पणियाँ)

प्रारम्भिक ३५३

मुख्यभक्तिरसनिरूपक पश्चिमविभाग

प्रथम लहरी — शान्तभक्तिरस ३५३-३६०
द्वितीय लहरी — प्रीतभक्तिरस ३६०-३७४
तृतीय लहरी — प्रेयोभक्तिरस ३७४-३८२
चतुर्थ लहरी — वत्सलभक्तिरस ३८२-३८७
पञ्चम लहरी — मधुरभक्तिरस ३८७-३९०

गौणभक्तिरसनिरूपक उत्तरविभाग

प्रथम लहरी — हास्यभक्तिरस ३९०-३९२
द्वितीय लहरी — अद्भुतभक्तिरस ३९२-३९४
तृतीय लहरी — वीरभक्तिरस ३९४-३९६
चतुर्थ लहरी — करुणभक्तिरस ३९६-३९७
पञ्चम लहरी — रौद्रभक्तिरस ३९८-४००
षष्ठ लहरी — भयानकभक्तिरस ४०१-४०२
सप्तम लहरी — बीभत्सभक्तिरस ४०२-४०३
अष्टम लहरी — रसों की (परस्पर) मैत्री-वैर-स्थिति ४०३-४१०
नवम लहरी — रसाभास ४१०-४१२

परिशिष्ट—क

ग्रन्थ में प्रतिपादित पदार्थों के भेद - प्रभेदों की तालिकायें

पूर्वविभाग

प्रथम लहरी ४१२

क्लेश ४१२
भक्ति की सुदुर्लभता ४१२

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
द्वितीय लहरी		४१६
भक्ति		४१६
अधिकारी		४१६
मुक्ति		४१६
रागात्मिका भक्ति		४१६
रागानुगा भक्ति		४१७
तृतीय लहरी		४१७
भाव		४१७
रत्याभास		४१७
चतुर्थ लहरी		४१७
प्रेम		४१७

दक्षिणविभाग

प्रथम लहरी		४१८
सद्भक्तिवासना		४१८
विभाग		४१८
सल्लक्षण		४१८
तेजस्		४१८
वावदूक (श्रीकृष्ण-गुण)		४१९
सुपाण्डित्यवान्		४१९
बुद्धिमान्		४१९
शुचि		४१९
ईश्वर		४१९
हरि		४१९
नायक		४१९
कृष्णभक्त		४२०
भक्त		४२०
श्रीकृष्णगुण (सामान्य)		४२०
वयस्		४२०
वसन		४२१
कचबन्धन		४२१

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
आलेप		४२१
माला		४२१
चित्र		४२१
रत्नमण्डन		४२१
वंश		४२१
द्वितीय लहरी		४२२
अनुभाव		४२२
तृतीय लहरी		४२२
सात्त्विक भाव (१)		४२२
सात्त्विक भाव (२)		४२२
वृद्धि		४२२
सात्त्विकाभास		४२२
चतुर्थ लहरी		४२३
आवेग		४२३
सञ्चारी भाव		४२३
सञ्चारी-आभास		४२३
भावसन्धि		४२३
चित्त		४२३
पञ्चम लहरी		४२४
श्रीकृष्णविषयारति		४२४
रस		४२४
भक्तिरसास्वाद		४२४

पश्चिमविभाग

प्रथम लहरी		४२५
शान्तभक्त		४२५
अनुभाव		४२५
शान्तिरति		४२५
शान्तरस		४२५

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
द्वितीय लहरी		४२६
दास		४२६
प्रीति		४२६
तृतीय लहरी		४२७
वयस्य (क)		४२७
वयस्य (ख)		४२७
वयस्		४२७
सख्य रति		४२७
(वृद्धि के स्तर)		४२७
चतुर्थ लहरी		४२८
कौमार (वयस्)		४२८
पञ्चम लहरी		४२८
मधुरभक्तिरस		४२८

उत्तरविभाग

प्रथम लहरी		४२९
हासरति		४२९
द्वितीय लहरी		४२९
लोकोत्तर कर्म		४२९
तृतीय लहरी		४२९
वीर-रस		४२९
चतुर्थ लहरी		४३०
करुणभक्तिरस के—		
विषयालम्बन		४३०
आश्रयालम्बन		४३०

विषय	श्लोकाङ्क	पृष्ठाङ्क
पञ्चम लहरी		४३०
रौद्रभक्तिरस के—		४३०
विषयालम्बन		४३०
आश्रयालम्बन		४३०
क्रोध		४३१
षष्ठ लहरी		४३१
भयानक भक्ति रस के—		४३१
विषयालम्बन		४३१
आश्रयालम्बन		४३१
सप्तम लहरी		४३१
बीभत्स भक्तिरस के आश्रयालम्बन		४३१
जुगुप्सा रति		४३१
अष्टम लहरी		४३२
प्रत्येक रस के सुहृद् तथा वैरी		४३२-३३
नवम लहरी		४३४
रसाभास		४३४

परिशिष्ट—ख

सम्पूर्ण ग्रन्थ की परिभाषा-अनुक्रमणी ४३५-४४५

परिशिष्ट—ग

सम्पूर्ण ग्रन्थ की श्लोकानुक्रमणी ४४७-५२०

परिशिष्ट—घ

सम्पूर्ण ग्रन्थ में उद्धृत प्रमाणग्रन्थों तथा प्रामाणिक व्यक्तिनामों की अनुक्रमणी ५२१-५२३

ग्रन्थ-सन्दर्भिका (सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची) ५२५-५३४

शुद्धिपत्र (श्री श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु — प्रथम खण्ड) ५३५-५३६